आजीवन शिष्यता

यीशु आधारित जीवन

परामर्श प्रशिक्षण चलाने वालों के लिए एक पुस्तिका

मार्क ऑक्सबरो

faith2share

यह पुस्तिका फेथ 2 शेयर द्वारा प्रकाशित है

इस पुस्तिका की सामग्री को प्रशिक्षण और अध्ययन के उद्देश्यों के लिए इलेक्ट्रॉनिक या मुद्रित प्रारूप में पुन: प्रकाशित यां कापी किया जा सकता है। हम स्थानीय भाषाओं में अनुवाद को भी प्रोत्साहित करते हैं। फिर भी फेथ 2 शेयर से पूर्व अनुमति के बिना पुस्तिका को लाभ के लिए बेचा नहीं जा सकता है।

यदि इस पुस्तिका की सामग्री को स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बदल दिया जाताहै तो हम मांग करते हैं कि आप इसे स्पष्टतापूर्ण मूल रूप के अनुसार रेखांकित करके फेथ 2 शेयर कार्यालय को एक प्रति भेज दें। हम स्थानीय संदर्भों में उपयोग के लिए सकारात्मक रूप से स्थानीय अनुकूलता को प्रोत्साहित करते हैं।

© फेथ 2 शेयर 2017

मार्क ऑक्सबरो
अंतर्राष्ट्रीय निदेशक

faith2share

Faith2Share
Watlington Rd
Oxford
OX4 6BZ
UK
+44 1865 787440
F2S@faith2share.net
www.faith2share.net

आजीवन शिष्यता कहानी

चेतावनी

कृपया इस पुस्तक को तब तक न पढ़ें जब तक आप कड़ी मेहनत, गहन व्यक्तिगत मुठभेड़, परिवर्तित सबंधों और बढ़ोतरी के लिए संघर्ष करने को तैयार न हों।

यह शिष्यता के बारे में एक पुस्तिका नहीं है। यह पुस्तिका उन लोगों के लिए है जो अन्य मसीही अगुवों का नेतृत्व खोज, प्रशिक्षण और सम्मति की यात्रा में कर सकें ताकि वे जानें कि हम यीशु आधारित जीवन प्रति दिन कैसे व्यतीत करते हैं।

कहानी शुरू होती है

आजीवन शिष्यता की यात्रा की शुरुआत 2010 में फेथ 2 शेयर की अंतर्राष्ट्रीय मिशन एजेंसी अगुवों के नेतृत्व में गठित समूह द्वारा हुई। इन अगुवों ने एक-दूसरे से जो कहा वह कुछ इस तरह है - "हम प्रचार और कलीसिया स्थापन में काफी अच्छे हैं, हम जानते हैं कि कैसे इन कलीसियाओं के अगुवों को प्रशिक्षिण और सहायता प्रदान करना है, हमने इसके लिए स्वास्थ्य सम्भाल, शिक्षा, समाजिक उत्थान और भुगौलिक देखरेख करने पर अत्यधिक प्रयास किया परन्तु हम यीशु मसीह के शिष्य के रूप में उन्हें बढाने में असफल हैं।"

शिष्यता की इस विफलता ने सीधा इन त्रासदियों को जन्म दिया है::

- मुख्य रूप से ईसाई देश अफ्रीका (रवांडा) में एक नरसंहार।
- हमारे चर्चों के अंदर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार (2016 में 53 बिलियन यू एस डालर चर्च अपराध पर खर्च हुआ।
- बड़े पैमाने पर नाममात्रवाद और पतन से यूरोपीय चर्चों का सफाया और अफ्रीका और अन्य जगहों पर चर्चों को प्रभावित करने की शुरुआत।

तब इन अगुवों ने पूछा, "अगर हम प्रत्येक मसीही व्यक्ति की घर पर, काम पर, मनोरंजन, राजनीति में, चर्च में, अकेले अपने कंप्यूटर पर; यीशु के समान प्रति दिन जीवन व्यतीत करने में मदद करें तो दुनिया कैसी दिखेगी?

यह कार्य पुस्तिका बताती है कि हमने उस प्रश्न का उत्तर कैसे देना शुरू किया।

विषय वस्तु

आजीवन शिष्यता की कहानी	3
अपने उद्देश्य निर्धारित करना	5
शिष्यता	8
कहानी : सुसमाचार प्रचारक – शिष्य-निर्माता और स्वामी	9
आजीवन शिष्यता	11
पूर्ण राष्ट्र के लिए आजीवन शिष्यता	12
परामर्श ढांचा	13
शुरूआत करना	15
परिवार में शिष्यता – यीशु आधारित परिवार	17
कार्यस्थल पर शिष्यता – यीशु आधारित कार्यकर्ता	19
समुदाय परिवर्तक शिष्यता – यीशु आधारित समुदाय	21
अच्छा समापन	23
गुणात्मक बढ़ोतरी के लिए प्रशिक्षण	24
निष्कर्ष	25
और अधिक संसाधन	25

अपने उद्देश्यों को निर्धारित करना

यह कार्य पुस्तिका आपको अपने परामर्श प्रक्रिया को एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ चलाने में मदद करने के लिए तैयार की गई है – उन सभी लोगों को योग्य बनाना जोकि यीशु मसीह के आजीवन 'शिष्यों के रूप में कार्य करना और जीवन व्यतीत करना चाहते हैं।

यह कार्य पुस्तिका आपको 'गुणन' रीति से "बढ़ाने" यां फैलाने के बारे में सोचने में मदद करेगी, दूसरे शब्दों में, आप उन लोगों की मदद कैसे कर सकते हैं जिन्हें आप प्रशिक्षित करते हैं ताकि वे आगे बढ़ें और दूसरों को प्रशिक्षित यां सरंक्षित करें।

अगले कुछ पन्नों पर आपको जो सामग्री मिलेगी, वह हमारे उस अनुभव पर आधारित है जो हमने संस्था का नाम में पिछले छह वर्षों में इन परामर्श केन्द्रों को अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के कई अलग-अलग देशों में, और यूरोप और मध्य पूर्व में इसी तरह के काम करने में सक्षम करने के दौरान पाया है। जो कुछ हमने सीखा है उसमें में से एक बात ये भी महत्वपूर्ण है कि आजीवन शिष्यता अत्यधिक परिवेश अनुकूल है। इसी कारण आपको इस पुस्तिका में पूरी तरह से कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं मिलेगा जो आपके परामर्श केंद्र के लिए फिट बैठता हो, बल्कि ये एक रूपरेखा है जिस पर आप एक ऐसा रचनात्मक परामर्श का निर्माण कर सकते हैं जो आपकी स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करता है।

आप नीचे दिए गए बॉक्स में अपने उद्देश्यों को लिख सकते हैं।

उद्देश्य 1

'आजीवन' शिष्यों को प्रतिदिन ***यीशु आधारित जीवन*** व्यतीत करते देखने के लिए।

उद्देश्य 2 आप किसे प्रशिक्षित करेंगे?

यही वह स्थान है जहाँ आपको परिवेश अनुकूलन शुरू करने की आवश्यकता है। पूरी फेथ 2 शेयर ने अब तक वरिष्ठ मिशन अगुवों को प्रशिक्षित किया है जिनके पास अपनी एजेंसी को सुधारने यां अपनी कलीसियाओं में आजीवन शिष्यता की समस्याओं को संबोधित करने में क्षमता थी। लेकिन आपको अपने लक्षित दर्शकों के बारे में स्पष्ट होना चाहिए। आपके संदर्भ में, कलीसिया को 'आजीवन शिष्यता' पद्धति में चलाने की सर्वाधिक क्षमता किनके पास है? इस प्रशिक्षण को बड़े पैमाने पर कौन ले जा सकता है?

उद्देश्य 3 आपका भौगोलिक लक्ष्य क्या है?

क्या आप एक शहर, एक देश, कई देशों में यां फिर एक स्थानीय समुदाय में परामर्श प्रशिक्षण चलाने की योजना बना रहे हैं, और क्या आप इसमें एक ही रीति (सम्प्रदाय) के विश्वासी इसमें सम्मलित करेंगे यां विभिन्न रीतियों के? ये सब संभव हैं और ये सभी सम्भव और मान्य हैं लेकिन आपको अपना रूपरेखा कार्यक्रम शुरू करने से पहले अपने लक्ष्य में स्पष्ट होना आवश्यक है यह यह कार्यक्रम “सभी समाहित” परामर्श प्रशिक्षण नहीं है।

उद्देश्य 4 आपकी बाधाएँ और चुनौतियाँ क्या हैं?

कुछ शोध के बाद, स्पष्ट होने का प्रयास करें, कि वर्तमान में क्या है जो आपके परिवेश में विश्वासियों को ‘यीशु आधारित’ जीवन व्यतीत करने से रोकता है। किसी परिवेश में ये इसलिए है, क्योंकि वे भौतिकवाद में फंसे हैं, किसी अन्य यह कबीलावाद, या जादू टोना, या नैतिकता के मुद्दे होंगे - या हो सकता है कि बाइबल की शिक्षा की कमी हो या फिर उनकी मातृ-भाषा में पवित्रशास्त्र की उपलब्धता । आपके परामर्श प्रशिक्षण को इन बाधाओं से निपटने की आवश्यकता है।

उद्देश्य 5 आप किन बदलावों की उम्मीद कर रहे हैं?

लिखने का प्रयास करें कि इस परामर्श प्रशिक्षण के 12 महीने बाद आप अपने परिवेश (शहर, देश इत्यादि) में क्या बदलाव देखने की आपेक्षा रखते हैं । इसके पूरा होने की सुनिश्चितता के लिए आपको परामर्श के दौरान क्या करना होगा?

उद्देश्य 6 गुणात्मक बढ़ोतरी

आप किनसे आपेक्षा रखते हैं कि वे इस आयोजन के बाद अपने स्वयं के परिवेश में इस परामर्श प्रशिक्षिण को दोहरा सकते हैं यां फिर इसी के समान प्रशिक्षिण कर सकते हैं ? आप उन्हें इसे करने के लिए कैसे सुसज्जित करेंगे?

उद्देश्य 7

क्या इस परामर्श के लिए आपके पास कोई अन्य उद्देश्य है जो हो सकता है आपके परिवेश के लिए काफी विशिष्ट है?

इससे पहले कि हम आपके परामर्श के डिजाइन की ओर बढ़ें, हमें वापिस कदम बढ़ाने और सुनिश्चित करने की जरूरत है कि हम दो चीजों के बारे में स्पष्ट होना करें।

- *क्या हम निश्चित रूप से जानते हैं कि शिष्यता से हमारा मतलब क्या है?*
- *वास्तव में का क्या अर्थ है "आजीवन"*

अगले दो खंड इन मूलभूत मुद्दों से निपटेंगे।

शिष्यता

हम सभी सोचते हैं कि हम जानते हैं कि शिष्यत्व क्या है, लेकिन आपके परामर्श को डिजाइन करने से पहले यह बेहतर होगा कि हम वापिस कदम उठाएं और एक पल के लिए उस पर प्रकाश डालें।

निश्चित रूप से शिष्यता वह कोर्स नहीं है जो आप मसीही बनने के बाद करते हैं। 'शिष्यता' पर पाठ्यक्रम उपयोगी हो सकता है, लेकिन शिष्यता अपने आप में ही बहुत अधिक महत्वपूर्ण है - यह हमारे पूर्ण जीवन के आकार और उद्देश्य के बारे में है। शिष्यता निश्चित रूप से एक सम्बन्ध के बारे में है - अनुग्रह (जिसका अर्थ है परमेश्वर से जीवन और आशीष प्राप्त करना), निष्ठा और आज्ञाकारिता का सम्बन्ध। संक्षेप में 'यीशु आधारित जीवन व्यतीत करना'।

दूसरी स्पष्ट बात यह है कि **बाइबल निर्देश नहीं देती कि शिष्य बाहर जाएं और अन्य शिष्यों को भर्ती करें ताकि कलीसिया बढ़ती रहे।** यदि ये आपको आश्चर्यचकित करता है, तो सुसमाचारों में फिर से देखें कि यीशु शिष्यता के बारे में क्या कहता है। यह दूसरा मार्ग है। यह यीशु का वादा है कि जैसे हम उसका अनुसरण करते हैं, उसे हमारे जीवन को आकार देने की अनुमति और यीशु आधारित लोगों के समुदाय में जीवन व्यतीत करते हैं तो हमारी साक्षी के वचन और हमारा जीवन, हमारा अस्तित्व अन्य लोगों को आकर्षित करेगा कि वे भी यीशु के खोजी और शिष्य बन जाएं। यदि आप चिंतित हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें सुसमाचार प्रचार, उपदेश यां कलीसिया स्थापन में शामिल नहीं होना चाहिए – इन बातों का अर्थ है कि ये कार्य हमारे लिए उदेश्य नहीं बल्कि यीशु आधारित जीवन व्यतीत करने का स्वभाविक परिणाम हैं। आखिर यीशु एक महान प्रचारक था, उसने बहुत उपदेश दिया और उसने कलीसिया स्थापित की!

इसलिए, आपका परामर्श मसीहियों के शिष्य बनाने के कार्य 'में सहायता करने के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम नहीं होगा। **यह एक परामर्श होगा जो हम सभी को प्रतिदिन यीशु आधारित जीवन व्यतीत करने में सहायता करेगा, ताकि हमारा जीवन इतना आकर्षक हो जाए कि दूसरों को भी इसके प्रति आकर्षित होने और यीशु के अनुयायी बनने से रोका ना जा सके।**

एक कहानी के लिए समय
आप अपने परामर्श के दौरान अगले पृष्ठों पर कहानी का उपयोग करने की इच्छा कर सकते हैं। आप इसे अपने प्रतिभागियों के लिए और अधिक दिलचस्प बनाने के लिए इसे अपने परिवेश अनुसार बना सकते हैं।

सुसमाचार प्रचारक, शिष्य निर्माता और-स्वामी

योशिय्याह, रूत और ईसा सभी एक देश में मसीही लोगों की अल्प संख्या वाले एक छोटे से शहर में रहते थे

योशिय्याह एक शानदार सुसमाचार प्रचारक था और हर दिन, काम के बाद, वह बाहर गलियों में निकलता और प्रभु यीशु में अपने विश्वास को बांटता और परमेश्वर ने उसके प्रयासों को नये मसीही लोगों को जन्म देकर आशीष दी। पहले वर्ष के अंत में वह 366 सदस्यों की एक कलीसिया का अगुवा था! फिर भी उसने अपने प्रचार को जारी रखा और छह साल के बाद उनकी कलीसिया का झुण्ड लगभग 2000 लोगों के साथ बढ़ गया !

रूथ ने कलीसिया स्थापन के लिए एक अलग तरीका अपनाया। पहले साल में वह अपनी एक पड़ोसी के पास पहुंची, उसे विश्वास में लेकर आई, नियमित रूप से उसे सिखाने के लिए उसके साथ मुलाकात की कि कैसे यीशु आधारित जीवन बिताया जाए और फिर उसने अपनी पड़ोसी को सिखाया कि कैसे वह स्वंय दूसरों को शिष्य बनाने के लिए अलग कर सकती है। पहले साल के अंत में उनके पास दो लोगों की कलीसिया थी, दूसरों तक पहुँचने के लिए दो लोग तैयार थे । छह वर्षों तक इस 'गुणात्मक बढ़ोतरी' विधि का उपयोग करके रूथ की कलीसिया की सदस्यता 32 तक पहुँच गयी थी । योशिय्याह की मंडली के सामने यह छोटा झुण्ड लग रहा था ।

ईसा का एक अलग दिलचस्प तरीका था। पहले साल में उसने बारह लोगों को विश्वास में जीतने और यीशु के अनुयायी बनने में सहायता करने का लक्ष्य रखा । अगले तीन वर्षों में उसने इन बारह लोगों के साथ अपने जीवन को साझा किया, उन्हें सिखाया और प्रोत्साहित किया और एक मजबूत समुदाय बनाया। उस तीसरे वर्ष के अंत में इन तेरह लोगों में से प्रत्येक 'यीशु आधारित समुदाय' का निर्माण करने की नई शुरूआत करने के लिए तैयार था और इस तरह 6 साल में ईसा एक साथ 156 लोगों का समुदाय बना पाया – जोकि जोशियाह के बड़े झुण्ड के साथ तुलना में अभी भी छोटा है ।

कई वर्षों तक यह प्रक्रिया जारी रही। योशिय्याह हर दिन सड़कों पर था, लेकिन दुख की बात यह है कि उसका स्वास्थ्य बिगड़ना शुरू हो गया, उसकी कलीसिया में गुटबंदी थी और उसका परिवारिक जीवन मुश्किल में था क्योंकि उसकी पत्नी और बच्चों ने उसे कभी नहीं देखा था। रूथ ने धैर्यपूर्वक अपने शिष्यों के साथ प्रति वर्ष एक व्यक्ति द्वारा अपने समुदाय को बढ़ाना जारी रखा । इस बीच, ईसा ने अपने समूह पर सामुदायिक दृष्टिकोण से धैर्यपूर्वक ध्यान केंद्रित करके तीन वर्षों में छोटे समूहों का निर्माण जारी रखा । फिर कुछ आश्चर्यजनक हुआ। ईसा का समुदाय वर्ष 12 में जोशियाह के बड़े झुण्ड से पांच गुना बड़ा हो गया और वर्ष 14 में रूथ के समुदाय ने भी जोशियाह को पछाड़ दिया।

कहानी का दुखद अंत, सुखद अंत हमारे सोचने के लिए एक सबक है ।

21 वर्षों की बढ़ोतरी के बाद जोशियाह थक गया था। वह अभी भी प्रतिदिन सड़कों पर था, उसकी कलीसिया के सदस्य हर समय उसका ध्यान पाने की माँग करते, उसकी पत्नी उसे छोड़कर चली गई, और अंत वह दिल का दौरा पड़ने से, लगभग 7000 लोगों के झुण्ड को बिना चरवाहे के छोड़कर मर गया ।

Addition, Multiplication and Community in Mission

	1 + 365	1 + 1	1+12
Year 1	1	1	1
Year 2	366	2	
Year 3	722	4	13
Year 4	1,087	8	
Year 5	1,452	16	
Year 6	1,817	32	156
Year 7	2,182	64	
Year 8	2,547	128	
Year 9	2,912	256	1,872
Year 10	3,277	512	
Year 11	3,642	1,024	
Year 12	4,007	2,048	22,464
Year 13	4,372	4,096	
Year 14	4,737	8,192	
Year 15	5,102	16,384	269,568
Year 16	5,467	32,768	
Year 17	5,832	65,536	
Year 18	6,197	131,072	3 million
Year 19	6,562	262,144	
Year 20	6,927	524,288	
Year 21	7,292	1 million	39 million

इस दौरान रूथ ने खुशी-खुशी हर साल एक व्यक्ति को अनुशासित करना जारी रखा, और विश्वासियों का समुदाय जो विकसित हुआ था वह लगभग एक लाख के करीब था ।

ईसा अपने तीसरे साल में मर गया लेकिन उसके द्वारा प्रशिक्षित शिष्यों का समूह जो उसने स्थापित किया वह उसकी पद्धति का इस्तेमाल करते हुए 21 वर्षों में 390000 तक पहुंच गया । ये अपने आपको ईसा के शिष्य कहते हैं शायद आप उन्हें मसीही नाम से बेहतर जानते हैं ।

यदि आप अपने परामर्श में यह कहानी सुनाते हैं और शायद अपने प्रतिभागियों से चर्चा करने के लिए पूछ सकते हैं
कि वे किस प्रकार की शिष्यता पद्धति का उपयोग कर रहे हैं और वे कैसे भविष्य में इसे बदल सकते हैं
इन तीनों पद्धतियों में लाभ और चुनौतियां क्या हैं? क्या शायद तीनों पद्धतियों की भूमिका को कलीसिया में एक साथ इस्तेमाल किया है?

आजीवन शिष्यत्व

यह पता लगाने के बाद कि शिष्यता से हमारा क्या अर्थ है, इसके बारे में भी हमें स्पष्ट होना चाहिए कि 'आजीवन' से हमारा क्या मतलब है। संक्षेप में यह बहुत सरल है। इसका मतलब है कि यीशु के समान शिष्यता, या अनुगमन हमारे जीवन के हर हिस्से तक फैला हुआ है। यह करने की तुलना में कहना बहुत आसान है। यही कारण है, कि परामर्श के दौरान हम जानबूझकर स्पॉट लाइट को हमारे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में डालते हैं।

आप प्रतिभागियों को नीचे दिए गए एक चित्र के समान एक रेखाचित्र खींचने के लिए कह सकते हैं जो दिखाता हो कि एक व्यक्ति ने अपने जीवन में 'गतिविधि के क्षेत्र' या 'जीने के पहलू' जिसने उसके जीवन को बनाया है, को कैसे समझ सकता है।

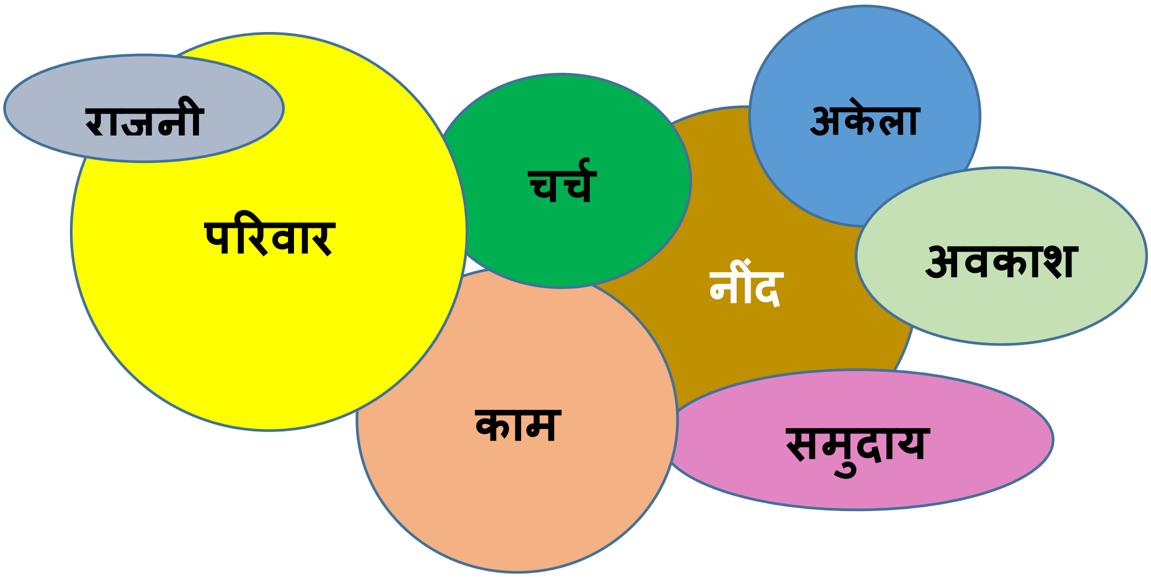

अब कई प्रश्न हैं, जिन्हें हम पूछ सकते हैं:

- मैं इनमें से किस क्षेत्र में यीशु की तरह जीवन बिताता हूँ?
- मैं इनमें से किस क्षेत्र में यीशु के विपरीत जीवन व्यतीत करता हूँ?
- इनमें से प्रत्येक क्षेत्र में यीशु के समान जीवन बिताने का क्या मतलब है?
- क्या यीशु आधारित जीवन वैसा ही होगा जैसा मैंने रेखाचित्र में दिखाया है?
- अगर मेरा शिष्यत्व 'आजीवन' होने जा रहा है तो मेरे जीवन के किस हिस्से में मुझे सबसे ज्यादा बदलाव देखने की जरूरत है?

आपके परिवेश में प्रश्न कुछ भिन्न हो सकते हैं इसलिए प्रश्नों को अपने परिवेश के अनुकूलित बनाएं। इस पुस्तिका में परामर्श मैट्रिक्स का सुझाव दिया गया है, जोकि विशेष रूप से तीन क्षेत्रों - परिवार, कार्य, समुदाय – के बारे में हैं, लेकिन यदि आपके संदर्भ में ये महत्वपूर्ण हैं तो आप अलग-अलग चुन सकते हैं।

पूर्ण राष्ट्र के लिए आजीवन शिष्यता

1975 में, जब बिल ब्राइट, कैंपस क्रूसेड के संस्थापक और लॉरेन कनिंघम YWAM के संस्थापक एक साथ दोपहर का भोजन कर रहे थे, परमेश्वर ने इनमें से प्रत्येक परिवर्तन प्रतिनिधि को एक दूसरे को देने के लिए एक संदेश दिया। उसी समय फ्रांसिस शेफ़र को भी इसी तरह का संदेश दिया गया था। वह संदेश यह था कि यदि हम किसी राष्ट्र पर मसीही प्रभाव डालते हैं तो हमें सात क्षेत्रों, या किसी भी शक्ति-केंद्र के साथ सराकात्मक रूप से समाज (बाईं ओर दिखाया गया है) से जुड़ने की आवश्यकता है।

एक दिलचस्प प्रयोग जिसे आप अपने परामर्श के दौरान उपयोग करना चाह सकते हैं कि आप अपने प्रतिभागियों से कहें कि वे इन सात पेंसिलों को (जो आपके राष्ट्र के आकार को बताए) प्राथमिकता क्रम में लगाएं:

- *a.* वे क्षेत्र जहाँ वे व्यक्तिगत रूप से ज्यादा शामिल होते हैं।
- *b.* वे क्षेत्र जहां उनकी कलीसिया के सदस्य सबसे अधिक शामिल होते हैं।
- *c.* वे क्षेत्र जहां वे युवा व्यस्क विश्वासियों को काम की तलाश करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।

इस अभ्यास के परिणामों की चर्चा का उपयोग प्रतिभागियों की मदद के लिए किया जा सकता है ताकि वे सोचें कि कैसे आजीवन शिष्यता न केवल लोगों को व्यक्तिगत आकार देना शुरू कर सकता है बल्कि ये पूर्ण राष्ट्र के रूप करता है।

अब हम अगले पृष्ठ को मैट्रिक्स के स्पष्टीकरण के लिए देखते हैं, जो आपके परामर्श को एक साथ रखने में सहायता करेंगे। यह एक संरचना है जो हमने पिछले छह वर्षों में अलग अलग भाषाओं में दुनिया भर के विभिन्न परिवेशों में कार्य करने के लिए पाया है, लेकिन ये आप पर निर्भर करता है कि आप स्वंय जांच करके प्रयोग करें कि आपके लिए क्या सर्वोत्तम है।

परामर्श मैट्रिक्स

अधिकांश परामर्श जो फेथ 2 शेयर द्वारा लगातार चार दिन चलाए गये, समाप्त हो चुके हैं, लेकिन आप शायद इसे अपने परिवेश में अनुकूल करना चाहते हों। यह एक दिवसीय परामर्श के रूप में काम नहीं करेगा, लेकिन यदि प्रतिभागी स्थानिक हों तो यह एक प्रशिक्षण श्रंखला के रूप में एक महीने तक चलाया जा सकता है।

मैट्रिक्स सिर्फ एक जाल या कार्यक्रम है जो लंबवत और क्षैतिज दोनों को जोड़ता है। ये कनेक्शन महत्वपूर्ण हैं। बुनियादी क्षैतिज खण्ड इस प्रकार हैं:

आजीवन शिष्यता परिचय	***परिवारिक परिवेश***	***कार्य परिवेश***	***समाजिक परिवेश***	***हमने जो सीखा और क्रिया योजनाएँ***

यदि आपके समय है यां फिर आप सोचते हैं कि आपके परिवेश में कुछ और खंड जोड़ने की आवश्यकता है तो आप इसमें कुछ इस तरह के खण्ड जोड़ सकते हैं जैसे कि "आराम परिवेश" यां "राजनैतिक परिवेश"।

बुनियादी लम्बवंत खण्ड इस प्रकार हैं :

अराधना	***बाइबल अध्ययन***	***चरित्र निर्माण***	***प्रार्थना***	***संसाधन***	***हमारी कहानी***

उपयोग की जाने वाली कार्यप्रणाली हैं: पूर्ण प्रस्तुति, पूर्ण चर्चा, गूंज समूह और बुद्धिशीलता, अल्पकार्य समूह, त्रिक प्रार्थना, व्यक्तिगत प्रतिबिंब, कहानी सुनाना यां जो कुछ भी आपके परिवेश में काम करता है।

अगले पृष्ठ पर पूर्ण सांचे का एक उदाहरण दिखाया गया है। जिन रीतियों से प्रत्येक सत्र चलाया जा सकता है, उन्हें निम्नलिखित पृष्ठों पर विस्तारपूर्वक लिखा गया है, लेकिन हमारे छह साल के अनुभव से निम्नलिखित सीखने के बिंदु भी सहायक हो सकते हैं।

- शुरुआत में ही एक समय ढांचा तैयार करें ताकि लोग वास्तव में एक दुसरे को जान सकें और भोजनावकाश और चाय अवकाश औपचारिक बातचीत के लिए थोड़ा लम्बा हो सके।
- विभिन्न भाषाओं का उपयोग करने के लिए तैयार रहें ताकि इसमें हर कोई भाग ले सके।
- जहां तक संभव हो पूर्ण स्थानीय वक्ता और संसाधनों का उपयोग करें।
- अराधना और प्रार्थना का समय इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं ना सिर्फ "धार्मिक क्रियाकर्म"।

	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पांचवां दिन
दिन का विषय	आजीवन शिष्यता परिचय	परिवार	कार्य स्थल	समाज	सीखना और कार्य योजना
सुबह	**पहुंचना**	आराधना	आराधना	आराधना	आराधना
		परिवार में बाइबल अध्ययन शिष्यता	कार्य स्थल पर शिष्यता बाइबल अध्ययन	समाज में शिष्यता बाइबल अध्ययन	आजीवन शिष्यता बाइबल अध्ययन
		पूर्ण परिवार में चरित्र निर्माण	पूर्ण कार्य स्थल पर चरित्र निर्माण	पूर्ण समाज में चरित्र निर्माण	कार्य समूह शिक्षा और कार्य बिन्दुओं को पकड़ने के लिए
		समस्याओं पर कार्य समूह	समस्याओं पर कार्य समूह	समस्याओं पर कार्य समूह	पूर्ण समापन और प्रार्थना
दोपहर	आराधना	त्रिक प्रार्थना	त्रिक प्रार्थना	त्रिक प्रार्थना	**प्रस्थान**
	आजीवन शिष्यता पर पूर्ण परिचय	पूर्ण पारिवारिक शिष्यता के लिए संसाधन	कार्य स्थल पर पूर्ण शिष्यता के लिए संसाधन	समाज में पूर्ण शिष्यता के लिए संसाधन	
	व्यक्तिगत परिचय	संसाधनों पर कार्य	संसाधनों पर कार्य समूह	संसाधनों पर कार्य समूह	
शाम	व्यक्तिगत परिचय	शिष्यता पर हमारी कहानियाँ	शिष्यता पर हमारी कहानियाँ	शिष्यता पर हमारी कहानियाँ	

पहला दिन : शुरू करना

व्यक्तिगत परिचय

आपके परामर्श प्रशिक्षिण के अच्छी तरह कार्य करने के लिए प्रतिभागियों को अपनी व्यक्तिगत कहानी काफी गहरे स्तर पर साझा करने की आवश्यकता होगी। ऐसा करने के लिए उन्हें पहले एक-दूसरे पर भरोसा करना सीखने की जरूरत है। यही कारण है कि हमारा सांचा व्यक्तिगत परिचय के लिए कम से कम दो सत्रों की अनुमति देता है। यह सिर्फ कमरे में सब तरफ जाकर अपना नाम और किरदार बताने का समय नहीं है और (हालाँकि आप इसके साथ शुरू कर सकते हैं)। व्यक्तिगत परिचय छोटे समूहों या त्रिक में बेहतर काम कर सकते हैं क्योंकि इसमें हर एक व्यक्ति के पास बात करने के लिए बहुत समय होता है। जो तीन सवाल आप छोटे समूह को दे सकते हैं; वे इस तरह हैं: "किसने आपको पहले शिष्य बनाया?", "अब आपको कौन शिष्य बना रहा है?" और "मुझे एक व्यक्ति के बारे में बताएं जिसे आप शिष्य बनाने की कोशिश कर रहे हैं?"। कुछ परिवेशों में चुप्पी तोड़ने वाले खेल काम कर सकते हैं। आपके सांस्कृतिक परिवेश में भरोसा बनाने वाले जो भी अभ्यास काम करते हैं उन्हें प्रयोग करें।

आजीवन शिष्यत्व का परिचय

यह सत्र आपके जैसे किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा बेहतर चलाया जाता है जिसके पास परामर्श के उद्देश्य के प्रति स्पष्ट विचार हो और जो इस पुस्तिका के पेज 8 -12 पर उपलब्ध सामग्री का कुछ उपयोग कर सकता हो। अनुरोध करने पर इस सत्र के लिए एक पावरपॉइंट रूपरेखा भी फेथ 2 शेयर में उपलब्ध है।

पूर्ण अधिवेशन

हम इस अधिवेशन को बढिया रीति से चलाने के लिए स्थानीय अगुवों के उपयोग की सलाह देते हैं लेकिन उन्हें अच्छी तरह सारांश करना सीखने की आवश्यकता है। उन्हें स्पष्ट रूप से बताया जाना चाहिए कि यह एक 'सम्मेलन' नहीं 'परामर्श' है, इसलिए उनकी बात व्याख्यान देने वाली नहीं बल्कि बातचीत करने को प्रोत्साहित और सक्षम बनाने वाली हो। प्रत्येक सत्र में प्रश्नों और पूर्ण चर्चा के लिए पर्याप्त समय होना चाहिए हो सके तो प्रस्तुति के दौरान 'buzz समूहों' में भी काम करें।

हमारा सुझाव है कि आप प्रत्येक प्रशिक्षक को उनके सत्र के अनुसार इस पुस्तिका के पृष्ठों की कापी दें (या आजीवन पुस्तिका की एक प्रति)

भाषा

यह पुस्तिका वर्तमान में सिर्फ अंग्रेजी में उपलब्ध है, और जल्द ही फ्रेंच और स्पेनिश में उपलब्ध होगी।

यह महत्वपूर्ण है कि प्रतिभागी परामर्श के दौरान जितना सम्भव हो सके स्वतंत्र रूप से संवाद करने में सक्षम हों और इसलिए हम सलाह देते हैं कि जितने भी सत्रों में सम्भव हो सके अनुवादन के साथ उनकी स्थानीय बोली का प्रयोग हो।

इस पुस्तिका के अगले तीन खण्ड आपको उन समस्याओं के प्रकार के बारे में कुछ और जानकारी देंगे जिनमें से प्रत्येक के बारे में आप इन इन तीन मुख्य दिनों में संबोधित करना चाहते हैं। लेकिन ये सिर्फ सुझाव हैं क्योंकि आपको अपने प्रतिभागियों को सुनना होगा, उनके द्वारा उठाए गए मुद्दों के प्रति संवेदनशील रहें। (यहां दिए गए उदाहरण पिछले छह वर्षों में फेथ 2 शेयर के परामर्श से हैं)।

दूसरा दिन : यीशु आधारित परिवार

यह पहला मुख्य विषय व्यक्तिगत संबंधों के व्यापक क्षेत्र के बारे में है और इसमें यीशु आधारित शादी, पतियों और पत्नियों के बीच रिश्ता, बच्चों को पालने और परिवार को बढाने के बारे में विस्तृत जानकारी होनी चाहिए । विशेष रूप से उस परिवेश में यह वर्ग, जाति, कबीलाई मुद्द्धा, वंश, पीढ़ियों का आपसी सम्बन्ध, विपरीत लिंग और समलैंगिक सम्बन्ध कैसा होना चाहिए और इसे यीशु आधारित कैसे बनाया जाए, बताया जाना चाहिए । यहाँ इन सभी को पूरा करने का समय नहीं है, इसलिए आपको यह तय करने की आवश्यकता है कि आपके परिवेश में प्रभावी शिष्यत्व के लिए सबसे अधिक कौनसा महत्वपूर्ण होगा ।

ऐसे कई बाइबल खण्ड हैं, जिनका इस सत्र में अध्ययन किया जा सकता है। प्रशिक्षक को आपके परिवेश अनुसार सबसे उपयुक्त चुनने की आवश्यकता होगी । शुरूआत करने के लिए एक स्पष्ट स्थान इफिसियों 6 है, लेकिन पारिवारिक रिश्ते रूत में, बच्चों की भूमिका (जैसे एली और शमूएल या युवा तीमुथियुस), के बारे में यहाँ देखना सही होगा । यीशु किस तरह एक अलग जनजाति और वंश के लोगों को जोड़ता है (जैसे सामरी और कनानी महिला), यां अब्राहम और सारा के मध्य के रिश्ते को । चुनाव करने के लिए कई भाग हैं !

चरित्र निर्माण पर आपके सत्र को मसीही चरित्र और शिष्यता के बारे में कुछ कठिन प्रश्नों से निपटने की जरूरत है - विशेष रूप से जहाँ स्थानीय संस्कृति के साथ विरोध हो सकता है। 'मंथन' के साथ शुरू करने का एक अच्छा तरीका है, जिस में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को उन शब्दों को चिल्लाना है जो यीशु आधारित पति या माँ का वर्णन करते हैं ' (धैर्यवान, धर्मी, कठोर, समझदार आदि) इसके अलावा 'आत्मा के फल' (गलातियों 5: 22-23) की भी इस संदर्भ में चर्चा कर सकते हैं । फिर भी कुछ अन्य विषयों जैसे पुरुष प्रधानता, घरेलू हिंसा, मर्दानगी, किशोर विद्रोह, कबीलाई पूर्वाग्रह, कलीसिया में नस्लवाद आदि देखने के लिए मत भूलें ।

जैसा कि आप चर्चा के लिए छोटे समूहों में विभाजित होते हैं, आप प्रतिभागियों को विषयों की एक श्रृंखला में से चुनने आमंत्रित कर सकते हैं और उन्हें विषयों को जोड़ने के लिए भी अनुमति दें । सभी समूहों को एक समान आकार में होने की

आवश्यकता नहीं है । कुछ उपयोगी विषय हमने इस भाग में पाए हैं :

- मसीही विवाह
- बच्चों की परवरिश
- कबीलाई वर्ग के मुद्दे / जाति /
- बड़े परिवार के सदस्यों को जोड़ना जोकि मसीही नहीं हैं ।

विभिन्न परिवेशों में प्रतिभागियों ने समूहों में द्विपत्नीवाद, तरुणावस्था, वंशवाद, और दूसरों के मध्य उचित मित्रता पर प्रश्न पूछे ।

RESOURCES

परिवारों और व्यापक सम्बन्धों के भीतर शिष्यता के लिए संसाधनों पर सत्र में यह पता लगाने की जरूरत है कि आपके परिवेश में कौनसे संसाधन पहले से ही मौजूद हैं, जो कहीं और भी उपलब्ध हो सकते हैं, जिनका उपयोग किया जा सकता है, यां आपके परिवेश में अपनाए जा सकते हैं और कौनसे संसाधन हैं जो निर्मित किए जाने आवश्यक हैं । हमने इस सत्र को शुरू करने से पहले यह जानना उपयोगी समझा कि 'संसाधनों' से हमारा मतलब क्या है। संसाधन एक व्यक्ति या समूह, शिक्षा, प्रशिक्षण उपकरण, एक कोर्स, एक वीडियो या पुस्तक, एक खेल, कुछ धन,, समय आदि कुछ भी हो सकता है ! लोगों को हमेशा महंगे बाहरी संसाधनों के बारे सोचने से बचाएँ और उन्हें उनके पास उपलब्ध संसाधनों के बारे में सोचने पर विवश करें । कुछ जो पहले आ चुके हैं, “जो लोग बच्चों के प्रति अच्छे हैं", " पुराने लोग जिन्होंने शादी में कठिनाइयों का अनुभव किया है ", "विवाह संवर्धन सत्र", "बाल समूह", आदि।

जब आप समूहों में विभाजित होते हैं तो लोगों को भौगोलिक आधार पर बांटना अक्सर उपयोगी होता है ताकि वे उन लोगों के साथ बात करें जिनके साथ वे परिवार / रिश्तों में शिष्यता के लिए एक नया संसाधन बनाने या उपयोग करने के लिए बाद में सहयोग कर सकें ।

गवाही और व्यक्तिगत कहानी हमेशा शक्तिशाली होती है । कुछ लोगों को इस अंतिम सत्र में अपनी कहानी बताने के लिए प्रोत्साहित करें (2-4) ताकि वे अपने परिवार में यीशु मसीह का शिष्य होने का अर्थ समझा सकें । इन लोगों के लिए प्रार्थना करके सत्र समाप्त करें।

तीसरा दिन : यीशु आधारित कार्यकर्ता

यह दूसरा मुख्य विषय कार्य, रोजगार और धन संपत्ति जैसे भौतिक संसाधनों के प्रबंधन के व्यापक क्षेत्र से संबंधित है इसमें बताया जाना चाहिए कि यीशु आधारित प्रबंधक या कर्मचारी कार्य स्थल, सम्बन्धों, धन सम्पत्ति को सम्भालने और नैतिकता में कैसा होना चाहिए। विशेष रूप से यह भाई-भतीजावाद या पक्षपात श्रमिकों का शोषण (विशेषकर बच्चों), घूसखोरी, भ्रष्टाचार और भौतिक वस्तुओं का लाभ इत्यादि मुद्दों से निपटने के लिए भी महत्वपूर्ण होना चाहिए। क्या यीशु आधारित करोड़पति जैसी कोई चीज हो सकती है? इन सभी को देखने का समय नहीं होगा, इसलिए आपको यह तय करने की आवश्यकता है कि आपके परिवेश में प्रभावी शिष्यता के लिए कौनसी बातें सबसे महत्वपूर्ण हैं।

ऐसे कई बाइबल खण्ड हैं जिनका इस सत्र में अध्ययन किया जा सकता है। प्रशिक्षिक को आपके परिवेश अनुसार सबसे उपयुक्त चुनने की आवश्यकता होगी। यीशु ने रिश्तों और शरीरक सम्बधों से बढ़कर रोजगार और पैसे के बारे में अधिक दृष्टांतों में बताया, क्योंकि वह जानता था कि यह उसके शिष्यों के लिए एक कठिन क्षेत्र होगा। एक प्रशिक्षिक ने प्रतिभागियों को बाइबल में लिखित कई प्रकार के रोजगारों की सूची बनाने के लिए कहा उन्होंने सुनार, कुम्हार और बढ़ई से लेकर गूलर के पेड़ उगाने वाले का जिक्र किया। इनमें से प्रत्येक कार्यकर्ता को देखना कई उपयोगी प्रकाशन ला सकता है।

चरित्र निर्माण पर आपके सत्र को मसीही चरित्र और शिष्यता के बारे में कुछ कठिन प्रश्नों से निपटने की आवश्यता है विशेष तौर पर उन बातों में जो स्थानीय संस्कृति के साथ उलझ सकती हैं। शुरू करने का एक अच्छा तरीका है कि आप 'मंथन' में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को उन शब्दों को चिल्लाने के लिए कहें जो यीशु आधारित प्रबन्धक यां कार्यकर्ता (परिश्रमी, विश्वासयोग्य, भला, सुनने वाला आदि) का वर्णन करते हैं। आप समूहों (2-3 लोगों वाले) से कहें कि वे इन प्रश्नों का उत्तर दें "आप क्या करते? (यदि आप किसी कर्मचारी को कार्य स्थल पर पैसा चुराते देखते) कुछ मुश्किल मुद्दों जैसे; मसीही लोग धन कैसे सम्भालें, व्यवसाय में परिवारिक सदस्या का पक्षपात, यां कार्य स्थल पर अन्याय आदि पर ध्यान देना ना भूलें।

जैसा कि आप चर्चा के लिए छोटे समूहों में विभाजित होते हैं, आप प्रतिभागियों को विषयों की एक श्रृंखला में से चुनने आमंत्रित कर सकते हैं और उन्हें विषयों को जोड़ने के लिए भी अनुमति दें। सभी समूहों को एक समान आकार में होने की आवश्यकता नहीं है। कुछ उपयोगी विषय हमने इस भाग में पाए हैं :

- मसीही प्रबंधक
- मसीही कर्मचारी
- मसीही समुदाय के भीतर धन के मुद्दे
- कार्यस्थल पर अपने विश्वास को साझा करना

विभिन्न परिवेशों में प्रतिभागियों ने बाल श्रम,गैर- मसीही लोगों के साथ व्यापार करना, मिशन के रूप में व्यवसाय, और मसीही उद्यमियों के बारे समूहों में बोला है।

RESOURCES

कार्यस्थल पर शिष्यता के लिए संसाधनों पर सत्र में यह पता लगाने की जरूरत है कि आपके परिवेश में कौनसे संसाधन पहले से मौजूद हैं, जिन्हें आपके परिवेश में इस्तेमाल या अनुकूलित किया जा सकता है, कौनसे संसाधन ऐसे हैं जिन्हें बनाने की आवश्यकता हो सकती है। जैसा कि पेज एक पर बताया गया है, हमने इस सत्र को शुरू करने के लिए यह उपयोगी समझा कि हम यह जान लें कि 'संसाधनों' से हमारा क्या मतलब है। कुछ संसाधन जो इस खंड में पहले आ चुके हैं वे इस तरह हैं "मसीही व्यवसाय संगती", "परमेश्वर कार्य कर रहा है वीडियो", " कलीसिया में श्रमिकों के लिए प्रार्थना," आदि।

जब आप समूहों में विभाजित होते हैं तो लोगों को भौगोलिक आधार पर बांटना अक्सर उपयोगी होता है ताकि वे उन लोगों के साथ बात करें जिनके साथ वे परिवार / रिश्तों में शिष्यता के लिए एक नया संसाधन बनाने या उपयोग करने के लिए बाद में सहयोग कर सकें।

समूहों के अलावा हमने चर्चा के लिए एक समिति बनाई है जिनमें चार प्रतिभागी वो हैं जो कि संसारिक क्षेत्र में कर्मचारी हैं यां रहे हैं, ताकि वे ‘कार्य स्थल पर यीशु आधारित’ शिष्य बनने के बारे में अपने संघर्ष के बारे में बता सकें।

गवाही और व्यक्तिगत कहानी हमेशा शक्तिशाली होती है। कुछ लोगों को इस अंतिम सत्र में अपनी कहानी बताने के लिए प्रोत्साहित करें (2-4) ताकि वे अपने कार्य स्थल पर यीशु मसीह का शिष्य होने का अर्थ समझा सकें। इन लोगों के लिए प्रार्थना करके सत्र समाप्त करें।

चौथा दिन : यीशु आधारित समुदाय

यह तीसरा मुख्य विषय यीशु के एक शिष्य के व्यापक समुदाय क्षेत्र से सम्बन्धित है कि वह कैसे इस में रहता है और इसमें बताया जाना चाहिए कि यीशु आधारित समुदाय का सदस्या कैसा होना चाहिए, उनका पड़ोसियों संग व्यवहार, (विशेषकर गैर – विश्वासियों संग) अवकाश समय का उपयोग, राजनीति में भागीदारी और किस तरह यीशु के शिष्य अपने स्थानीय समुदाय को बदल सकते हैं। किसी विशेष परिवेश में स्ताव और भेदभाव मीडिया की भूमिका, व्यसन, विश्वास से भटकना और उत्पात और दुसरे मतों के लोगों से सम्बन्ध जैसे मुद्दों पर निपटने के लिए यह महत्वपूर्ण हो सकता है । शायद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है, कि “यीशु के शिष्य पूर्ण समुदायों को“ नमक और प्रकाश, परिवर्तन के एजेंट के रूप में कैसे बदल सकते हैं? ”इन सभी को देखने का समय नहीं होगा इसलिए आपको यह निर्णय लेने की आवश्यकता है कि प्रभावी शिष्यता के लिए आपके परिवेश में कौन-से भाग सबसे महत्वपूर्ण है ।

ऐसे कई बाइबल खण्ड हैं जिनका इस भाग में अध्ययन किया जा सकता है, प्रशिक्षिक को आपके परिवेश में सबसे उपयुक्त खण्ड चुनने की आवश्यकता होगी । शुरू करने के लिए एक दिलचस्प स्थान न्हेमयाह की पुस्तक हो सकती है जो एक समुदाय के परिवर्तन, समुदाय के पुनर्निर्माण (साथ ही दीवार का निर्माण) एक शत्रुतापूर्ण माहौल में रहना, समाज में सुसमाचार की भूमिका और बहुत सी बातों का जिक्र करती है । एक दूसरा दृष्टिकोण प्रेरितों के कार्य 2:44-3:16 के साथ शुरू करना होगा जो कई मुद्दों को उठाता है जैसे कि कैसे शिष्य एक साथ स्थानीय समुदाय में रहते और सेवा करते हैं (वचन और कार्य में) । चुनने के लिए कई खण्ड हैं !

समुदाय में मसीही विश्वास की वैधता को अक्सर मसीही शिष्यों के चरित्र के आधार पर आंका जाता है। इसलिए आपके सत्र को मसीही चरित्र और शिष्यता के बारे में कुछ कठिन सवालों से निपटने की जरूरत होगी - विशेष रूप से जहां स्थानीय संस्कृति के साथ टकराव हो सकता है । (जैसा कि पौलुस ने हमें सिखाया है, कुछ चीजें अनुमोदित हो सकती हैं लेकिन हमारी गवाही के लिए सहायक नहीं है – उदाहरन के लिए :- शराब का उपयोग या विपरीत लिंग के साथ व्यवहार।) फिर से आप कुछ शब्दों, जोकि यीशु आधारित पड़ोसी, राजनैतिक यां समाजिक कार्यकर्ता का वर्णन करतें हैं, को जोर से चिल्लाकर सत्र को शुरू कर सकते हैं । इनमें से कुछ प्रश्न चर्चा में सहायक हो सकते हैं । “मुस्लिम पड़ोसी मसीही लोगों में ऐसा क्या देखते हैं जिस कारण वे मसीह का इन्कार करते हैं?” “क्या (बच्चों के शोषण जैसे) काण्ड कलीसिया में गुप्त रीति से निपटाए जाने चाहिए यां समुदाय में

खुले रूप से?” “मेरे समुदाय में यीशु के शिष्य के रूप में कौनसा व्यवहार गलत है?”

जैसा कि आप चर्चा के लिए छोटे समूहों में विभाजित होते हैं, आप प्रतिभागियों को आमंत्रित कर सकते हैं कि वे विषयों की एक श्रृंखला में से चुनें और आप उन्हें विषयों को जोड़ने के लिए भी अनुमति दें। सब समूहों का आकार समान नहीं होना चाहिए। हमने इसमें कुछ उपयोगी विषय पाए हैं वे इस तरह हैं:

- परिवर्तित समुदाय
- राजनीति में मसीही
- हिंदू आदि पड़ोसियों से / मुस्लिम / बौद्ध /जुड़ना ।
- सार्वजनिक मीडिया या सोशल मीडिया का समुदायों को रूपांतरित करने के लिए उपयोग

विभिन्न परिवेशों में प्रतिभागियों ने कट्टरपंथियों, कट्टरवाद, पर्यावरण देखभाल, जैव-नैतिकता और आर्थिकसशक्तिकरण के बारे में पूछा है ।

शिष्यता और परिवर्तनशील समुदायों के सत्र में यह पता लगाने की जरूरत है कि आपके परिवेश में कौनसे संसाधन पहले से मौजूद हैं, और कौनसे संसाधन उपलब्ध या अनुकूलित किए जा सकते हैं । जैसा कि पेज एक पर बताया गया है, हमने इस सत्र को शुरू करने के लिए यह जानना उपयोगी समझा कि 'संसाधनों' से हमारा क्या मतलब है । कुछ जो पहले आए अ चुके हैं वे इस तरह हैं, “सामरी रणनीति (राष्ट्र गठबंधन का शिष्यकरण) "अंतर-विश्वास महिलाओं के समूह", " मसीही राजनेताओं के लिए प्रार्थना", "जो लोग मसीहों को इस्लाम / हिंदू / आदि धर्मों के बारे में सिखा सकते हैं”, " युवा जो सोशल मीडिया में अच्छे हैं ", आदि।

जब आप समूहों में विभाजित होते हैं तो लोगों को भौगोलिक आधार पर बांटना अक्सर उपयोगी होता है ताकि वे उन लोगों के साथ बात करें जिनके साथ वे समुदायिक रुपात्रण और शिष्यता के लिए एक नया संसाधन बनाने या उपयोग करने के लिए बाद में सहयोग कर सकें । विकल्प के तौर पर आप अपने समूहों को (शहरी/ ग्रामीण/ यां मुस्लिम / हिन्दू पड़ोसी) रख सकते हैं ।

गवाही और व्यक्तिगत कहानी हमेशा शक्तिशाली होती है । कुछ लोगों को इस अंतिम सत्र में अपनी कहानी को अपने शब्दों में बताने के लिए प्रोत्साहित करें (2-4) ताकि वे बता सकें कि उनके स्थानीय समुदाय में यीशु मसीह का शिष्य होने का अर्थ है और किस तरह उन्होंने परमेश्वर द्वारा अपने समुदाय को परिवर्तित होते हुए देखा है । इन लोगों के लिए प्रार्थना करके सत्र समाप्त करें।

पांचवां दिन : अच्छा समापन

परामर्श के अंत में सबसे बड़ी चुनौती लोगों के ध्यान को खींचे रखना है जोकि अपने घरों को लौटने की यात्रा और अन्य कार्यों के बारे में सोचने में व्यस्त हैं । लेकिन इन परामर्शों की शिक्षाओं और भविष्य के परिवर्तनों की नींव डालना अत्यंत महत्वपूर्ण है इसलिए अपने आधे दिन को अच्छे से योजनाबद्ध करें अन्यथा लोग लोग जल्दी चले जायेंगे (शरीरक तौर पर यां मानसिक रूप से !) यहाँ कुछ सुझाव हैं ।

- अंतिम बाइबल अध्ययन का नेतृत्व करने के लिए किसी को चुनें जिसे हर कोई सुनना पसंद करेगा - 'सर्वश्रेष्ठ दाखरस' अंत तक रखें।
- अंतिम सत्र को बहुत ही संवादात्मक बनाएं, न कि सिर्फ एक खुला सत्र । गूंज समूहों और छोटे चर्चा समूहों का उपयोग कार्य बिन्दुओं और मुख्य शिक्षाओं पर सहमत होने के लिए करें।
- फ्लिप चार्ट का उपयोग करें, सभी को 'व्यक्तिगत प्रतिबद्धता कार्ड' भरने के लिए दें, दीवार पर प्राथमिकताएं लिखें और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा अनुसार रंगीन सितारे जोड़ने के लिए आमंत्रित करें ,जिन्हें वे समर्थन करना चाहते हैं, आदि।
- आप अंतिम आराधना सभा में प्रभु की मेज (रोटी तोड़ना)को शामिल कर सकते हैं ,शायद एक स्थानीय अराधना मण्डली को भी ला सकते हैं ।
- प्रतिभागियों की सूची ,संपर्क विवरण के साथ सभी को प्रदान करें ताकि वे एक दूसरे के संपर्क में रह सकें ।

और उसके बाद ……।

- परामर्श के तीन सप्ताह के भीतर सभी प्रतिभागियों को स्मरण दिलाते हुए लिखें कि उन्होंने किन संसाधनों को एकत्रित करके साँझा करने के लिए वचनबद्धता दिखाई थी ।
- प्रतिभागियों को प्रसारित और प्रोत्साहित करने के लिए एक छोटी रिपोर्ट तैयार करें।

गुणात्मक बढ़ोतरी के लिए प्रशिक्षण

फेथ 2 शेयर ने अब तक काफी संख्या में इन परामर्शों को दुनिया भर के विभिन्न परिवेशों में चलाया है, और इनसे जो बहुत कुछ सीखने को मिला वह इस प्रारंभिक परामर्श पुस्तिका में निहित है। फिर भी आजीवन शिष्यता की सभी चुनौतियों से आगे बढने के लिए हमें साधारण बढ़ोतरी की बजाय गुणात्मक बढ़ोतरी के आदर्श की पालन करना होगा (पेज 10 पर दी कहानी देखें) एक और परामर्श जोड़ने के बजाय, प्रत्येक प्रतिभागी को अपने घर लौटने और अपने परिवेश अनुसार अपने वास स्थान पर परामर्श का संचालन करने के लिए तैयार होना चाहिए।

फेथ 2 शेयर में हमारे पास इसके कई उदाहरण हैं जो पहले से ही हो रहे हैं।

- जब हमने काठमांडू, नेपाल में एक परामर्श आयोजित किया, तो हमने उस देश के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभागी आमंत्रित किए। फिर नेपाल के स्थानीय मिशन आंदोलन समर्थन के साथ प्रतिभागी अपने स्थानीय क्षेत्रों में वापिस चले गये और काठमांडू सभा से एकत्रित सामग्री का उपयोग करके कई स्थानीय परामर्श आयोजित किए।
- नैरोबी, केन्या में हमने जो परामर्श आयोजित किया वहां प्रतिभागियों में से एक प्रतिभागी चर्चा से इतना प्रेरित हुआ कि उसने अपनी कलीसिया में वापिस लौटकर वहाँ प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक श्रृंखला चलाया और परामर्श में पाए सभी संसाधनों को उपयोग किया। एक अफ्रीकी मिशन आंदोलन के लिए अपने कार्य में वह लिखता है, "आजीवन शिष्यता और दूसरों को इस में प्रशिक्षित करने की सेवकाई कार्य में ही मैं अब केन्द्रित हूं। "

गुणात्मक बढ़ोतरी के इस मॉडल को सक्षम करने के लिए आप निम्नलिखित पर विचार कर सकते हैं:

- अपने परामर्श में परामर्शदाताओं के लिए प्रशिक्षण का दिन जोड़ें (या तो तुरंत या बाद की तारीख)।
- प्रत्येक प्रतिभागी को इस पुस्तिका की एक प्रति अपने परामर्श पर प्रदान करें (विशेष रूप से उनकी मातृभाषा में)।
- अपने सभी प्रतिभागियों को इसी परामर्श के समान अपने स्थान / परिवेश में एक वर्ष के भीतर अपना परामर्श चलाने के लिए चुनौती दें, और छह महीने के बाद उन्हें पूछने के लिए लिखें कि उनकी योजनाएं कैसे प्रगति कर रहीं हैं।

निष्कर्ष

एक अंतिम विचार ... अपनी मृत्यु के समय, क्या यीशु एक यहूदी था या मसीही? गणितज्ञ लोग बंद आकृतियों और केन्द्रीय आकृतियों के बारे में बात करते हैं। जब हम इस्लाम और मसीहत के मध्य सीमाओं के बारे में चिंतित हों, कि हमारे समुदाय में अधिक बौद्ध हैं या ईसाई हैं, हमारी कलीसिया का आकार कैसे बढ़ाएँ, हम सोचते हैं - कौन समुदाय के अंदर है और कौन समुदाय के बाहर है। आजीवन शिष्यता हमें सोचने की बजाय करने के लिए प्रोत्साहित करता है । हम किसका अनुगमन करते हैं, यां हमें हमारी पहचान कौन देता है, हमारे जीवन को आकार कौन देता है, हमारे लिए हमारा केंद्र कौन है?

यीशु के केंद्र में पिता के प्रति उसकी आज्ञाकारिता, राज्य के प्रति उसका उत्साह, परमेश्वर, मनुष्यता, और सारी सृष्टि के साथ उसका सम्बन्ध, थे । उसके लिए यहूदी और सामरी, पुरुष और महिला, के मध्य सीमाएं बहुत कम महत्व रखती थीं । मैं मानता हूँ कि वह अपने मन में अपना ध्यान पिता पर लगाए हुए मरा, उसका केंद्र इन बातों पर नहीं था कि वह यहूदी है यां मसीही, निश्चित रूप से ‘ धर्म परिवर्तित’ तो बिल्कुल नहीं ।

अन्य और संसाधन

कुछ किताबें

Contagious Disciple-Making by DL Watson and PD Watson. Pub. Thomas Nelson (2014)
Making Disciples across cultures by CA Davis. Pub. IVP Books (2015)
The Discipleship Difference: Making Disciples While Growing As Disciples by RE Logan. Pub. Logan Leadership (2016)
Discipleship Matters by P Maiden. Pub. IVP (2015)
Discipling Nations by DL Miller. Pub YWAM Publishing (1998)
Making Disciples Today by J Bowen. Pub. Wycliffe BT (2013)
The New Conspirators by T Sine. Pub. IVP Books (2008)
The Cost of Discipleship by D Bonhoeffer. Pub. SCM Press (1959)
Intentional Discipleship and Disciple-Making J Kafwanka & M Oxbrow Pub. Anglican Communion Office (2016)
Discipling the Disciplers by JO Akinfenwa. Pub. Ibadan Dioc. Press (2010)
Boundless by B Bishop. Pub. Baker Books (2015)

कुछ संस्थाएं

Discipling the Nations Alliance http://www.disciplenations.org
Rooted in Jesus http://www.rootedinjesus.net
Disciple First www.disciplefirst.com
Relational Discipleship Network http://relationaldiscipleshipnetwork.com
Faith2Share www.faith2share.net

आजीवन शिष्यता के लिए चरित्र निर्माण पर बाइबिल के पद्य

बाइबल में बहुत सारे पद्य दिए गए हैं जो हमें यीशु के एक शिष्य के चरित्र के बारे में सोचने में मदद कर सकते हैं लेकिन यहाँ कुछ ऐसे हैं जो आपके काम आ सकते:

निर्गमन 20:16-17
लैव्यव्यवस्था 19:11
लैव्यव्यवस्था 19:15
लैव्यव्यवस्था 19:17-18
लैव्यव्यवस्था 25:14,17
व्यवस्थाविवरण 5:20-21
व्यवस्थाविवरण 15:7
व्यवस्थाविवरण 15:11
व्यवस्थाविवरण 23:19
नीतिवचन 3:28-29
नीतिवचन 24:25
ओबद्वाह 1:12
जकर्याह 7:9-11
जकर्याह 8:16-17
मलाकी 2:10
मत्ती 5:23-24
मत्ती 18:15-17
मत्ती 18:21-35
मत्ती 22:36-39
मरकुस 9:50
मरकुस 12:28-31
लूका 6:30
लूका 10:25-27
लूका 17:3-4
यूहन्ना 13:34-35
यूहन्ना 15:12-17
रोमियो 1:11-12
रोमियो 12:5
रोमियो 12:10
रोमियो 12:16
रोमियो 13:8-9
रोमियो 14:10-13
रोमियो 14:15
रोमियो 14:21
रोमियो 15:7
रोमियो 15:14
रोमियो 16:16
1 कुरिन्थियों 1:10
1 कुरिन्थियों 10:24
1 कुरिन्थियों 11:33
1 कुरिन्थियों 12:7
1 कुरिन्थियों 12:25-27
1 कुरिन्थियों 16:15-16
गलातियों 5:14-15
गलातियों 5:26
गलातियों 6:1-5
इफिसियों 4:2
इफिसियों 4:29
इफिसियों 4:32
इफिसियों 5:19-21
फिलिप्पियों 2:3-4
फिलिप्पियों 4:2
कुलुस्सियों 3:9-10
कुलुस्सियों 3:13
1 थिस्सलुनीकियों 3:12
1 थिस्सलुनीकियों 4:18
1 थिस्सलुनीकियों 5:11-15
2 तीमुथियुस 2:24
तीतुस 1:9
इब्रानियों 3:13
इब्रानियों 10:24-25
इब्रानियों 13:16
याकूब 2:8
याकूब 4:11-12
याकूब 5:9
याकूब 5:16
1 पतरस 1:22
1 पतरस 2:17
1 पतरस 3:8
1 पतरस 4:9-10
1 पतरस 5:5
1 पतरस 5:14
1 यूहन्ना 1:7
1 यूहन्ना 3:11-23
1 यूहन्ना 4:7-12

My Notes

faith2share

Faith2Share
Watlington Rd., Oxford, OX4 4JH, UK
www.faith2share.net